A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सेनिया घराने की शिक्षण-परंपरा और आधुनिक युग में उसका प्रभाव

Sejal Soni
Research Scholar, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan
Music Department, language wing, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 02 May, 2026

Soni, S. (2026). Seniya Gharane Ki Shikshan-Parampra Aur Aadhunik Yug Mein Uska Prabhav. Swar Sindhu, 14(1), 163-165.

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में घरानों का विशेष स्थान रहा है, जिनमें सेनिया घराना अपनी विशिष्ट वादन-शैली और तालीम पद्धति के लिए अग्रणी माना जाता है। यह घराना तानसेन-पर्वंपरा से उद्भूत होकर ध्रुपद-प्रधान सौंदर्य, मींड-प्रधान वादन और नाद-सिद्धांत पर आधारित शिक्षण पद्धति के लिए प्रसिद्ध है। पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा इस घराने की रीढ़ रही है, जिसमें मौखिक परंपरा, दीर्घकालीन रियाज़, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा सांगीतिक शुचिता पर विशेष जोर दिया जाता था। किंतु आधुनिक युग में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों, विश्वविद्यालयी शिक्षा, तकनीकी प्रगति तथा वैश्विक मंचों के विस्तार ने इस घराने की शिक्षा-पद्धति को नए ढंग से प्रभावित किया है। यह शोध पत्र सेनिया घराने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभिन्न शाखाओं, शिक्षण पद्धति, प्रमुख कलाकारों के योगदान तथा 20वीं और 21वीं शताब्दी में आधुनिक चुनौतियों एवं प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण करता है। संस्थागत शिक्षा, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और फ्यूजन संगीत के युग में भी सेनिया परंपरा की शुद्धता, मींड-समृद्धि, ध्रुपद अंग और राग-भाव की गहराई आज भी जीवित है।

मुख्य शब्द: *सेनिया घराना, तानसेन, गुरु – शिष्य परंपरा, ध्रुपद अंग, मसीतखानी गत, सितार, आधुनिक प्रभाव, शिक्षण परंपरा।*

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध विरासत घराना प्रणाली के माध्यम से सदियों से संरक्षित हुई है। सेनिया घराना इन सभी घरानों में सबसे प्रतिष्ठित माना जाता है क्योंकि यह सीधे मियाँ तानसेन से जुड़ा है। तानसेन मुगल सम्राट अकबर के नवरत्न थे और ध्रुपद शैली के महान साधक थे।

उनके वंशजों और शिष्यों को 'सेनिया' कहा गया। इस घराने ने ध्रुपद को न केवल गायकी में बल्कि वाद्य संगीत (रुद्र वीणा, सितार, सुरबहार) में भी स्थापित किया। मसीत सेन द्वारा विकसित 'मसीतखानी गत' आज भी सेनिया सितार शैली की पहचान है। इस घराने की शिक्षण-पद्धति सदैव गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित रही है।आधुनिक युग में बदलते सामाजिक ढांचे, वैश्वीकरण, तकनीकी माध्यमों तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा ने इसकी पारंपरिक शैली को प्रभावित किया है। संगीत शिक्षा विश्वविद्यालयों, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स और छोटी अवधि के कोर्स तक सीमित हो गई है। ऐसे में यह जानना आवश्यक है कि सेनिया जैसी गहन परंपरा कैसे जीवित है और इसका प्रभाव क्या है। इस शोध पत्र में इन परिवर्तनों का विश्लेषण किया है। इसका उद्देश्य

- सेनिया घराने की ऐतिहासिक उत्पत्ति और विकास का अध्ययन करना।
- इसकी पारंपरिक शिक्षण-परंपरा का विस्तृत विश्लेषण करना।
- प्रमुख कलाकारों और उनके योगदान को रेखांकित करना।
- आधुनिक युग में इस परंपरा के प्रभाव, चुनौतियों और अवसरों का मूल्यांकन करना।
- भविष्य में संरक्षण की दिशा सुझाना है।

सेनिया घराने का ऐतिहासिक विकास

सेनिया घराना 16वीं शताब्दी में तानसेन के साथ प्रारंभ हआ। तानसेन के बाद उनके पुत्रों और दामाद की तीन मुख्य शाखाएँ विकसित हुईं- सूरतसेन (जयपूर), बिलासखान और नौबत खान। कुछ वंशावलियों में मिसरी सिंह का उल्लेख है, हालांकि कुछ विद्वान (जैसे ब्रहस्पति जी) इनकी ऐतिहासिकता पर प्रश्न उठाते हैं। औरंगजेब काल (1668 के बाद) में संगीत संरक्षण कम हुआ, लेकिन सेनिया कलाकारों ने परंपरा बनाए रखी।

18वीं शताब्दी में मसीतखान (तानसेन की छठी पीढ़ी) ने सितार को एक निश्चित शैली दी। उन्होंने 'मसीतखानी गत' का विकास किया, जो ध्रुपद अंग पर आधारित, धीमी गति वाली और गायकी शैली वाली है। यह जयपूर-सेनिया शाखा की विशेषता बनी। जयपुर-सेनिया में 17 पर्दों वाला सितार प्रयुक्त होता है, जो परंपरा की निरंतरता का प्रतीक है।

रामपुर-सेनिया शाखा में उस्ताद वजीर खान (1860-1926) प्रमुख थे, जो तानसेन की पुत्री सरस्वती की वंशावली से थे। वे रुद वीणा (बीनकार) और गायकी दोनों में निपुण थे।

मैहर-सेनिया (या मैहर घराना) उस्ताद अल्लाउद्दीन खान के माध्यम से प्रसिद्ध हुआ, जिन्होंने रवि शंकर, अन्नपूर्णो देवी आदि को प्रशिक्षित किया।

19वीं-20वीं शताब्दी में दिल्ली और वाराणसी शाखाएँ उभरीं बरकतुला खान, आशिक अली खान आदि ने परंपरा को आगे बढाया। इस प्रकार सेनिया घराना वाद्य और गायकी दोनों में सक्रिय रहा।

शाखा	मुख्य स्थान	प्रमुख कलाकार	समयकाल	विशेष योगदान
जयपुर-सेनिया	जयपुर	मसीत सेन, उनके वंशज	18वीं शताब्दी	मसीतखानी गत, 17 फ्रेट सितार
रामपुर-सेनिया	रामपुर	उस्ताद वजीर खान	19वीं-20वीं	रुद्र वीणा, गायकी अंग
दिल्ली-सेनिया	दिल्ली	आशिक अली खान, मुश्ताक अली खान	20वीं शताब्दी	शुद्ध ध्रुपद अंग, सुरबहार
मैहर-सेनिया	मैहर	उस्ताद अल्लाउद्दीन खान	20वीं शताब्दी	बहु-वाद्य विशेषज्ञता, विश्व प्रसार
वाराणसी-सेनिया	वाराणसी	विभिन्न वंशज	19वीं-20वीं	ध्रुपद एवं वाद्य संयोजन

शिक्षण-परंपरा

सेनिया घराने की शिक्षण प्रणाली शुद्ध गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी, जो गुरु-शिष्य संबंध को आध्यात्मिक बंधन मानती थी।

गुरु-शिष्य संबंध: शिष्य गुरु के घर रहकर वर्षो तक संगीत प्रशिक्षण लेता था। गुरु के व्यक्तिगत,शैलीगत तत्वों का अनुकरण करता था। शिक्षा मौखिक और व्यावहारिक थी।

रियाज की पद्धति: घंटों स्वर साधना, स्वर-लिपि, मींड, गमक, तान, आलाप, जोड़ और झाला। वीणा पर 'झाला' और सितार पर मसीतखानी गत का विशेष अभ्यास। रियाज में अनुशासन और भक्ति पर बल दिया जाता था।

गंडबंधन: औपचारिक दीक्षा समारोह, जिसमें गुरु शिष्य को गंडा (पवित्र धागा) बाँधकर परंपरा में शामिल करता था। केवल चुने हुए शिष्यों को गोपनीय तकनीकें (विशिष्ट मींड, तान) सौंपी जाती थीं।

क्रमिक विकास: प्रारंभ में स्वर-ज्ञान और सरगम, फिर राग-रचना और बंदिशें, फिर आलाप-विस्तार, जोड़, झाला। ध्रुपद अंग को आधार बनाकर गायकी शैली सिखाई जाती थी।

गोपनीयता और मौखिकता: लिखित नोटेशन कम, श्रुति (सुनकर सीखना) पर जोर। यह प्रणाली दीर्घकालीन साधना (10-15 वर्ष) मांगती थी।

पंडित देबू चौधरी ने इस परंपरा को संस्थागत रूप दिया, लेकिन मूल साधना बनाए रखी।

सेनिया घराने के प्रमुख कलाकार और उनका योगदान

कलाकार	जीवनकाल	मुख्य वाद्य/शैली	प्रमुख योगदान
तानसेन	1506-1589	ध्रुपद गायकी, वीणा वादन	ध्रुपद का विकास, राग रचना
मसीत खान	18वीं शताब्दी	सितार	मसीतखानी गत का आविष्कार
उस्ताद वजीर खान	1860-1926	रुद्रवीणा, गायकी	रामपुर दरबार में संरक्षण, बहु-वाद्य निपुणता
उस्ताद मुश्ताक अली खान	1911-1989	सितार, सुरबहार	शुद्ध ध्रुपद अंग वाली सितार, बीन अंग का प्रयोग
पंडित देबू चौधरी	1935-2021	सितार	संस्थागत शिक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षण
अन्नपूर्णा देवी	1922-2018	सुरबहार, वीणा	विश्व प्रसिद्ध शिक्षिका

आधुनिक युग में प्रभाव और चुनौतियाँ

प्रभाव:

- वैश्विक प्रसार: रवि शंकर आदि ने सेनिया प्रभावित शैली को विश्व पटल पर पहुँचाया।
- शिक्षा: विश्वविद्यालयों और अकादमियों में सेनिया शैली सिखाई जाती है। ऑनलाइन क्लासेस ने पहुंच बढ़ाई।
- वादन शैली: समकालीन सितारवादकों में मींड-समृद्ध, गायकी अंग दिखता है।
- फ्यूजन और नवाचार: कई कलाकार पॉप, जाज के साथ प्रयोग करते हैं पर मूल अंग बनाए रखते हैं।

चुनौतियाँ:

- गुरु-शिष्य की गहनता कम: छात्र समय और आर्थिक दबाव के कारण पूर्ण साधना नहीं कर पाते।
- संस्थागत शिक्षा: सैद्धांतिक अधिक, व्यावहारिक कम।
- व्यावसायीकरण: शॉर्ट-कट सफलता और स्टेज परफॉर्मेंस की मांग।
- डिजिटल युग: ऑडियो/वीडियो से सीखना सुविधाजनक लेकिन गहराई और गुरु-शिष्य संबंध कमजोर।
- रिकॉर्डिंग और मीडिया: राग-रचना का व्यावसायिक उपयोग।

फिर भी, पंडित प्रतीक चौधरी, अन्य शिष्य और संस्थाएँ परंपरा को पुनर्जीवित कर रही हैं।

निष्कर्ष

सेनिया घराने की शिक्षण-परंपरा भारतीय संगीत की आत्मा है शुद्धता, साधना, राग-भाव और गुरु-भक्ति की गहराई। यह परंपरा मुगल काल से आधुनिक डिजिटल युग तक निरंतरता बनाए हुए है। आधुनिक चुनौतियों के बावजूद इसका प्रभाव शिक्षा, वादन शैली और वैश्विक संगीत में स्पष्ट है। संरक्षण के लिए आवश्यक है:

- गुरु-शिष्य को संस्थाओं के साथ संतुलित रूप से जोड़ना।
- डिजिटल आर्काइव और रिकॉर्डिंग का रचनात्मक उपयोग।
- युवा कलाकारों को प्रोत्साहन और आर्थिक सहायता।
- शोध और तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा।

यदि हम इस विरासत को बनाए रखते हैं, तो सेनिया घराना भविष्य में भी भारतीय संगीत की पहचान बनेगा। यह केवल संगीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक निरंतरता का प्रतीक है।

References

1. भातखण्डे, V. N. (2008). हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति.
2. दीगर, S. (2014). सितार और उसका विकास.
3. Wade, B. C. (1998). Music in India: The Classical Traditions.
4. Sen, S. (2010). The Gharana Tradition in Hindustani Music.
5. Sanyal, R. & Widdess, R. (2004). Dhrupad: Tradition and Performance.
6. मिश्रा, L. (2016). संगीत शास्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन.